PEER REVIEWED JOURNAL
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 07 , Issue : 10 | November - December 2020

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के शिक्षा के क्षेत्र में विचारों पर अध्ययन

राम जुवारी पी. एच. डी. शोधार्थी

इतिहास विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा, (म०प्र०)

सार

तिलक एक महान् शिक्षक थे तथा शिक्षा के सम्बन्ध में उनके विचार भी बड़े उत्तम थे। वे एक महान् विद्वान थे। तिलक ने तकनीकि तथा प्राविधिक शिक्षा पर जोर दिया। भारत में प्रचलित तत्कालीन शिक्षा प्रणाली की निन्दा करते हुए तिलक ने कहा था कि, यह मात्र छोटे-छोटे कर्मचारियों को पैदा करती है। शिक्षा के सम्बन्ध में उन्होंने कहा था कि पढ़ना-लिखना सीख लेना ही शिक्षा नहीं। शिक्षा वही है, जो हमे जीविकोपार्जय योग्य बनाए। देश का सच्चा नागरिक बनाए, हमे हमारे पूर्वजों का ज्ञान और अनुभव दे।

मुख्य शब्द : शिक्षा, राष्ट्रीयता, तकनीकि, नागरिक, इत्यादि ।

प्रस्तावना

तिलक ने राष्ट्रीयता के विचार को मूर्त रूप प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा को एक महत्वपूर्ण साधन माना!! उनकी मान्यता थी की राष्ट्रीय शिक्षा के द्वारा ही जनता में राष्ट्रीय एकता की भावना का संचार किया जा सकता है!!

तिलक के अनुसार शिक्षा का अर्थ कोरा अक्षर-ज्ञान अथवा सूचनाओं का संग्रह मात्र नहीं था उनके अनुसार शिक्षा वह माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्तियों के व्यक्तित्व का निर्माण होता है और उनमें स्वाभिमान और आत्मनिर्भरता के भाव जागृत होते हैं!!

शिक्षा के प्रति तिलक का दृष्टिकोण व्यावसायिक नहीं था!!

वे शिक्षा को राष्ट्र निर्माण के प्रभावशाली भावनात्मक साधन के रुप में विकसित करना चाहते थे !!

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 07 , Issue : 10 | November - December 2020

इसलिए उन्होंने पाश्चात्य प्रणाली पर आधारित शिक्षा की अपेक्षा देश में राष्ट्रीय शिक्षा के प्रचार-प्रसार को महत्त्व प्रदान किया!!

राष्ट्रीय शिक्षा की प्रणाली और पाठ्यक्रम के प्रति उनके दृष्टिकोण को सारतः निम्नलिखित रुप में प्रस्तुत किया जा सकता है:-

(अ) शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो

तिलक अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्रदान किए जाने को अनुचित मानते थे!!

उनकी दृढ़ मान्यता थी कि बालकों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा दी जानी चाहिए ताकि वह सहज ढंग से शिक्षा ग्रहण करके अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकें!!

तिलक अंग्रेजी भाषा को शिक्षा के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना तो उपयोगी मानते थे किंतु वह यह अनुभव करते थे इस शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी की बाध्यता का बोझ विद्यार्थियों पर लादना किसी भी प्रकार से उचित नहीं था !!

उनका मत था कि एक विदेशी भाषा के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने में विद्यार्थियों को कठिनाई तो होगी ही उन्हें एक स्थायी हीन भावना उत्पन्न हो जाएगी!!

उनका मत था कि शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी की अनिवार्यता विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को कुंठित कर देगी!!

(ब) एक राष्ट्र भाषा तथा लिपि की एकरूपता पर बल

तिलक भारत की भाषायी और सांस्कृतिक विविधता से परिचित थे वह यह अनुभव करते थे कि देश की भाषा की विभिन्नताओं के कारण एक ऐसी संपर्क भाषा की आवश्यकता थी !!

जिसमें सभी भारतीय परस्पर संवाद कर सकें!!!!

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 07 , Issue : 10 | November - December 2020

तिलक के अनुसार अंग्रेजी को भारतीयों की एक समान संपर्क भाषा के रूप में अपनाया जानना अव्यवहारिक और अनुचित था!!उन्होंने दृढ़ता से व्यक्त किया कि हिंदी को भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में अपना कर,, एक समान संपर्क भाषा की आवश्यकता की व्यावहारिक पूर्ति भी की जा सकती है और इसके माध्यम से विदेशी भाषा पर निर्भरता को भी समाप्त किया जा सकता है!!

उनके अनुसार हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में मान्यता का भावनात्मक महत्व भी था और व्यवहारिक भी,,, भावनात्मक दृष्टि से राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी भारतीयों की एकता और स्वाभिमान की अनुभूति का माध्यम बनती और व्यवहारिक दृष्टि से वह भारतीयों के मध्य संवाद का सहज माध्यम बन सकती थी!!

भारत के विभिन्न भागों में भाषाओं के साथ-साथ लिपियों की भी विभिन्नता विद्यमान थी!!

जिसके कारण लोगों के लिए एक दूसरी भाषाओं को समझना और उनकी शिक्षा ग्रहण करना प्रतीत होता था!!

तिलक ने इन समस्याओं के समाधान के लिए देवनागरी लिपि को सभी भारतीय भाषाओं की एक समान लिपि के रूप में स्वीकार किया जाना उचित माना!!

लिपि की एकरूपता के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए रोमन लिपि को अपनाए जानने के सुझाव को उन्होंने अव्यावहारिक,, अनुचित और हास्यपद माना!!

(स) तकनीकी शिक्षा पर बल

तिलक ने शिक्षा के पाठ्यक्रम में तकनीकी शिक्षा को सम्मिलित किए जाने को आवश्यक माना उनके अनुसार तकनीकी शिक्षा के विस्तार के द्वारा ही देश में औद्योगिकीकरण की

PEER REVIEWED JOURNAL
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 07 , Issue : 10 | November - December 2020

संभावनाएं विकसित की जा सकती थी और आर्थिक एवं औद्योगिक क्षेत्र में विदेशी वर्चस्व को समाप्त किया जा सकता था!!

(द) धार्मिक शिक्षा पर बल

तिलक ने धार्मिक शिक्षा को पाठ्यक्रम के सम्मिलित किया जाना अत्यधिक महत्वपूर्ण माना!!

धार्मिक शिक्षा के माध्यम से तिलक भारतीयो में नैतिक भावना और संस्कृति के प्रति प्रेम का विकास करना चाहते थे!!

उनकी मान्यता थी कि शिक्षा के पाठ्यक्रम में अन्य तत्व व्यक्तियों की ज्ञान और सूचनाओं की वृद्धि में सहायक हो सकते हैं किंतु वे उनका चरित्र निर्माण नहीं कर सकते!!

तिलक के अनुसार चरित्र निर्माण,, देश भक्ति,, और अतीत के प्रति गौरव केवल धार्मिक और नैतिक शिक्षा के द्वारा ही सुनिश्चित किए जा सकते हैं!!

किंतु यह स्पष्टीकरण आवश्यक है की धार्मिक शिक्षा को अनिवार्य बनाए जाने का तिलक का आग्रह किसी भी प्रकार की सांप्रदायिक भावना से प्रेरित नहीं था वह किसी भी धर्मावलंबी पर दूसरे धर्म की मान्यताओं को थोपना उचित नहीं मानते थे!!

(च) राजनीतिक शिक्षा

तिलक युवकों को देश की उन्नति और स्वाधीनता के आंदोलन में समर्पित होने के लिए प्रशिक्षण प्रदान करने में शिक्षा को एक महत्वपूर्ण साधन मानते थे!!

इस दृष्टि से राजनीतिक शिक्षा उनके अनुसार शिक्षा के पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग था!!

राजनीतिक शिक्षा के माध्यम से वह छात्रों को देश के तत्कालीन दुरावस्था के कारणों के ज्ञान तथा उनके निवारण के लिए विदेशी संस्कृति उन्मूलन की आवश्यकता के प्रति चेतना विकसित करना चाहते थे!!

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 07 , Issue : 10 | November - December 2020

उनकी मान्यता थी की राष्ट्रीय शिक्षा के अंतर्गत शिक्षित युवक जन जागरण का संदेश पूरे देश में प्रसारित कर सकेंगे!!

उपसंहार

तिलक ने देश में एकता की भावना उत्पन्न करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया। इसके लिए उन्होंने महाराष्ट्र में न्यू इंग्लिश स्कूल, दक्षिण शिक्षा समाज, फर्ग्यूसन कॉलेज आदि संस्थाएँ स्थापित की। 1907 ई. महाराष्ट्र में विद्या प्रसारक मण्डल की स्थापना में तिलक का बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान रहा था। विद्यार्थियों को धार्मिक शिक्षा दिए जाने की आवश्यकता पर बल देते हुए तिलक ने कहा था कि, किसी को अपने धर्म पर अभिमान कैसे हो सकता है, यदि वह इससे अनभिज्ञ हो। धार्मिक शिक्षा का अभाव ही इस बात का एकमात्र कारण है कि देशभर में मिशनरियों ईसाई पादरियों का प्रभाव बढ़ गया है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण हेतु भी धार्मिक शिक्षा आवश्यक है। मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने की आवश्यकता पर बल देते हुए तिलक ने कहा था कि, आज जो व्यक्ति अच्छी-अच्छी अंग्रेजी लिख-बोल लेता है, वही शिक्षित माना जाता है, किन्तु किसी भाषा का ज्ञान हो जाना ही सच्ची शिक्षा नहीं है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डी0वी0 तहमानकर; फादर आफ इण्डियन एनरेस्ट एण्ड दि मेकर आफ मार्डन इण्डिया (जानमरे, लन्दन, 1956), पृ० 128-130 |
2. वी0 शिरोल; इण्डिया, मेक्मीलन, लन्दन, 1929, पृ0 63 |
3. वीएजी0 तिलक; कर्मयोग तथा स्वराज्य, 'इस्पीचेज एण्ड राइटिंग्स आफ तिलक', पृ0 276--280 |
4. टी0 वी0 पर्वत; बाल गंगाधर तिलक, पृ0 289 |
5. वही, 31 मई 1916 को अहमदाबाद में स्वराज्य पर दिया गया भाषण, पृ0 282 |

ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 07 , Issue : 10 | November - December 2020

6. प्रो0 वी0पी0 वर्मा आधुनिक भारतीय राजनीति चिन्तन, प्रचम संस्करण, 2007, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, संपथ प्लेस आगरा, पृ0 325 |
7. वही, पृ0 326 |
8. डॉ0 पुरूषोत्तम नागर; आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीति चिंतन, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर, सप्तम् संस्करण, 2003, पृ0 195 |
9. वही पृ0 195 |
10. डी0वी0 तहमानकर; लोकमान्य तिलक, फादर आफ इण्डियन एनरेस्ट एण्ड दि मेकर आफ मार्डन इण्डिया (जानमरे, लन्दन, 1956), पृ0 232, 235 |